

महाराज ! आइ तीसो वर्षसँ
उपरक एक टा स्मृति मानस-पटलपर
अंकित भऽ गेल अछि जखन तोरा
पूजापर बंसल देखलियह अछि । मोन
पड़ि अयलाह अछि काशी काका,
मोन पड़ि आयल अछि कुवड़ाहा
एक्कावला, मोन पड़ि आयल अछि
रंग-विरंगक सनेस, मोन पड़ि अयलीह
अछि काकी आ मोन पड़ि आयल अछि
एक दिन भेल तोरापर तामस ।

‘हमरापर भेल तामस कोना
मोन पड़ि अयलह आ कोन तामस ?’
महाराज पुछलनि आ उत्सुकतासँ
चरणोदको लेब छोड़ि हभरे दिस
ताकऽ लगलाह ।

देशमे स्वराज्य भेलक आ जय-
पुर, जोधपुर, बिकानेर, पाटियाला,
आदि जतेक महाराज छलाह से भारत-
सरकार रूपी समुद्रमे गंगाक धारा
जकाँ बिलौन भऽ गेलाह, किन्तु हमर
महाराज ओहिनाक ओहिना छथि ।
असलमे हमर महाराज हमर काशी
काकाक छोट बालक आ हमरासँ
किछु वर्षक जेठ । जे पूरा जेठ रहितथि
तेँ मुनि भाइ संह कहैत रहितथिनि,
मुदा से नहि छथि । जे एकदम स-
तुरिया रहितथि तेँ दोस, मोत, पार
किछु लगा लेने रहितहुँ, मुदा मेहो
नहि छथि । तखन, बाल्यकाल अरि
बोतल संगे-संग । यद्यपि बड़ नेता
अवस्थासँ दुनू गोटे दू ठाम पहुँच लग-
लहुँ, किन्तु जखन छट्टीमे दुनू गोटे

अकारण क्रोध मनुष्यक एक पैघ दुर्बलता
थिकैक । किन्तु से होइत अयलैक अछि तेँ एकरा
स्वाभाविको कहल जा सकैत अछि । भ्रान्त धारणासँ
उत्पन्न तामस तँ कौखन अनर्थक सृष्टि कऽ बैसैत
अछि । मुदा महाराजक सङ्तुरियाकेँ अवस्थावस्थामे
वस्तु चिन्हबामे यदि भूम भऽ गेलनि तँ तकर
निराकरण तँ श्रेष्ठजन कैये देलथिन । की छल ओ
भ्रान्त धारणा ?

लिच्छीक महादेव

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’ —

गाममे एकट्ठा होइ तेँ दू देह एक प्राण
रहैत छल । हमर पुछारि जेँ आइतमे
होइत तेँ महाराजक ओहि ठाम लोक
तकितय आ महाराजक पुछारि जेँ
होइतनि तेँ हमरा आइनमे ताकऽ
अवितनि । काकी कहवो करथिन—
‘जहाँ-जहाँ माधोधामि तहाँ-तहाँ
मुतही चलान ।’ हमरा जेँ किछु विशेष
वस्तु माय दितथि तेँ बिन महाराजकेँ
बाँटिकऽ देने कोना खँतहुँ आ महाराज-
केँ जेँ कोनो वस्तु होइतनि तेँ ओ हमरा
बिना कोना खँतथि ? पाकल आम हो
कि लताम, आँता हो कि सरिपका ।
हमर बाबूजी पूजा कऽ उठथि तेँ
नँवेद्य लऽकऽ हम हुनका तर्कत रहि-
तथिनि आ हुनकर काका (बाबूजी)
जेँ पूजाकऽ उठितथिन तेँ नँवेद्य लऽकऽ
ओ हमरा तर्कत फिरितथि । एहने
सम्बन्ध हमर महाराजक संग अछि
जे एखन धरि चलि रहल अछि ।

एहि छट्टीमे गाम गेलहुँ तेँ आइन-
मे पयर धोइत महाराजक आइन पहुँचि
गेलहुँ । ओ ठीक काशी काका जकाँ
सराइ-बाटी पसारने, हाथी दाँतक,
स्फटिकक, कमलाक्षक तथा पितीझिया-
क माला पहिरने पूजाक आसनपर
ध्यानस्थ बंसल छलाह । हमरा मोनमे
भेल तामसक चर्चा हुनका अत्यन्त
उत्सुक बना देलकनि । हुनक उत्कट

उत्सुकता देखि हम बाल्यकालक ओ
घटना सुनावऽ लगलियनि । कहलि-
यनि :

हम एक बेर बड़ा दिनक छट्टीमे
गाम गेल रही । मुनि महाराजकेँ तर्कत-
तर्कत हुनका आइन गेलहुँ तेँ काशी
काका पूजापर बंसल छलाह । हम
देखलहुँ जे पूजाक सराइमे एक टा
लिच्छी सेहो छनि । हमर मोन चपचपा
गेल । ‘एहि मासमे ई लिच्छी तेँ आन
ठाम कतहुँ नै भेटितथि । ई तेँ काशी
काका कोनो मन्त्रक बले ई लिच्छी
ऊपर कयलनि अछि । आइ बिन नँवेद्य
लेने एहि ठामसँ नहि उठबनि ।’
हम गड्डी मारिकऽ बंमि गेलहुँ ।
काशी काकाक पूजा पाँच घंटा
समाप्त होइनि । ई बुझितो धँयपूर्वक
हम बंसल रहलहुँ । महाराज ओहि दिन
कतहुँ चल गेल रहथि । हुनको प्रतीक्षा
करैत रही । एहि बीचमे कतेक बात
सोचि गेलहुँ । ‘काशी काकाकेँ लिच्छी
एक्के टा छनि, एहीमेसँ ओ ककरा
बँटताह ?’ अधिक काल बंसल देखि
ओ एक बेर कहलनि जे मुनि गेलथुन
अछि अंग्रग बनबाक हेतु बरही, तेँ
एखन जाह । फेर दोसर काल अविहह ।
हमरा आरो सन्देह भेल जे प्रायः
लिच्छीमे बाँट-बखरा बेसी नहि हो
तेँ ई हमरा टारि रहल छथि । हम
हुनके दलान-आइन, एमहर-ओमहर
घुमैत पूजा समाप्त होयबाक प्रतीक्षा
करैत रहलहुँ । पूजा समाप्त होइत
हम जूमि गेलहुँ । काशी काका चरणो-
दक सब सराइमेसँ चननकाठी लऽकऽ
एक टा कटोरीमे एकट्ठा कयलनि
आ भगवानकेँ पोछिकऽ सम्पुटे
रखलनि । पुनः दोसर सम्पुट बाहर
कयलनि आ लिच्छीकेँ पोछिकऽ
ओहिमे राखि लेलनि । सराइमे अक्षत,
मिसरी, किसमिस, छहोड़ा, नँवेद्यमे



अमरजीक सम्बन्धमे भ्रान्त
समाचार पसरल छल जे ओ
मरि गेलाह । तहियेसँ ओ
चन्द्रनाथ मिश्रक ऊपर ‘अमर’क
मोहर मारि लेलनि । ओना,
सम्पूर्ण मैथिली-जगत दिनक
परिचय जनैत छनि । स्वभावसँ
विनोदी तेँ व्यंग्य लिखबामे
मिद्धहस्त । मुदा बड़ कम लोक
जनैत अछि जे हुनक हँसमुख
चेहरा ओ विनोदी स्वभावक
तहमे कोन आगि जरैत रहैत
छनि । हुनक कथापर कान
देनिहार केँ ? समाज आ
शासकमेसँ प्रायः क्यो नहि ।

देने छलथिन से थोड़ेक हमरो देलनि ।
हम मोन मसोसिकऽ नँवेद्य लऽ लेलहुँ ।
मुदा जाहि लिच्छीक द्वारे एतेक काल
बंसलहुँ से नहि भेल । कचोटसँ मोन
उठिनि भऽ गेल । आव आरो निश्चय
भऽ गेल जे एही द्वारे काशी काका
हमरा टारैत छलाह । अस्तु, मोन
खसोने हम एहि विश्वासक संग विदा
भऽ गेलहुँ जे महाराज तेँ ओहिमेसँ
बाँटिकऽ देवे करताह ।

आइन आवि भोजन-भात कय-
लहुँ, मुदा चित्त टाँल छल महाराज-
पर । बेर खसलैक तेँ महाराजकेँ
देखलियनि नवका हाफ सट पहिरने
चल अवत । ओ उल्लसित छलाह ।
आविकऽ अपन अंगक कपड़ा, नीचाँ
धोकड़ी, ऊपर जेवी आदि देखऽ
लगलाह । कोना-कोना कपड़ा किन-
लनि, कोना दर्जोसँ सियोलनि से सब
वर्णन करऽ लगलाह । किन्तु हमर
बखरा लिच्छी नहि देलनि तेँ हमहुँ
(शेष पृष्ठ २८ पर)

नव-पुरान (पृष्ठ १४ शेषांश)

हँसि बजलाह—युनुस भाइ... हे, ई दबाइसभ छैक । पोखरीनी चौकपर काका ठाढ़ हेताह; दऽ देवनि ।”

—खबरदार ! हम डाक दौड़ाह नै छी । जा-जा... राज्य-ट्रान्सपोर्टसँ पठविह गऽ । हुमइलाह ड्राइभर साहेब ।

मुदा हिनक क्रोधसँ अप्रभावित ओ व्यक्ति कागते बान्हल एकटा छोट बंडिल हिनक बगलमे सीटपर राखि आपस भेल ।

ओकरा यत्न-पूर्वक ड्राइभर रखलनि ।

बस चलल !

ऊँच सड़कक दोवगली शीशोक पाँती । दूर-दूर धरि धनहर बाध । धरतीक हरियर आँचर !!

कच्च !!

ब्रेकपर गाड़ी रुकल ।

—पसिजर उठा ले पिरथी । चिकरलाह खाँ साहेब ।

एकटा कुशकाय बोनिहार काँखतर सीक-पटै दबने माथपर पीयर धोतीक मुरेठा बन्हने, ताहिपर छोट मोटरी रखने हाथ उठाऽ बस रोकवाक चेष्टा कऽ रहल छल ।

किछु बिलम्ब भेल । स्टार्टक सिगनलक प्रतीक जोड़ा टीन-ध्वनि नहि आयल ।

—की भलौ रे !

—रहिकाक चारि आना दै अछि । चलू-चलू... एहन पसिजर नै चाही । ईजिनक स्वरसँ ऊपर पिरथीलालक स्वर आयल ।

—उठा ले-उठा ले । आखिरी बस छैक । गुरु गम्भीर स्वरमे चिकरलाह खाँ साहेब ।

बस चलल !

मुँहपर दीप्ति रहनि । मोहितलाल दिस एक दृष्टि फेकि एक्सीलेटर दबलनि । बस उड़ि चलल ।

खिरमा-स्टाप !

केउटी-रनवे । उतरू-चढ़ू ।

मोहितलाल दिस ताकि बजलाह—‘बाबू, ई दबाइक बेगारी करितैक स्टेट-बसक ड्राइभर आ ओइ भरियाके चारि आनामे आठ कोस ढोइतैक ? ओतऽ तँ स्टेजसँ भाड़ा दियऽ । एक स्टेज, दू स्टेज... । कतबो दूर जाउ, भाड़ा दियऽ स्टेजसँ ।

मोहितलाल बजलाह—ड्राइभर साहेब ! स्टेट-बसमे एना भेंडा-बकरी जकाँ नै कोँचै छैक । लोककेँ आराम भेटै छैक । समयक पाबन्दी रहै छैक । एकटा व्यवस्था रहै छैक । एकाध-टा फ्री उठबै छी तँ दसटा अनगल करैत होयब । गैर कानूनी करैत होयब । आ स्टेज तँ हिसाबक सुविधाक लेल छैक । सँकड़ो बस चलैत छैक । ओकर नियम कानून छैक ।

—हिसाबक सुविधा ! से बाबू, लोक सुविधा लेल छैक कि लोके हिसाबक सुविधाक लेल अछि ? कम-प्रात दरवाजा छोट अछि तँ देह पकड़ि लियऽ... दरवाजा नहि फैल होयत । सुविधा... सीट भरल अछि तँ अहाँ रोगी लेने ठाढ़ रहू, नहि चढ़ाओत । नव-कनियाँ लेने सड़कक कात ठाढ़ रहू साझ भरली.. नहि टोकत । ककर ट्रेन छुटैतक एमे । एक घंटा देर-सबेर पहुँचब । कतहु बरखामे भीजैत अछि वयो । दसगोरा ठाढ़ गेल कोन हज, ककरो रोगी गेलैक, चारिटा फाजिल लोकक काज ससरलैक । दू आना कम्मो देलक तँ चढ़ि गेल । अपन नाता-रिस्ता । भाइ चारा । आपसक कानून । आपसक रेट । सब हँसी-खुशी गेल ।

हिनक गप्प तर्कहीन । तथ्यहीन । एहन लोककेँ कोना बुझायब । पुरान सामन्तशाही विचार, व्यवहार ! नव विचारक लेल एतेक घृणा । सोचलक मोहित ।

—ड्राइभर साहेब । स्टेट-बसक नफा सरकारमे जयतैक, ओहिसँ स्कूल, अस्पताल, सड़क बनैत छैक, दसक उपकारक चीज बनैत अछि । दस गोटाकेँ नोकरी भेटैत छैक ।

—सभटा बञ्जल ! बाबू, मुदा जखन पाँचटा पक्षमे ‘ड्राइभरसन’ छल जखन

एक गैलनमे चारि मील गरदामे चलय तखन कहाँ रहय अहाँक स्टेट बस ! आइ पोच भेल तँ हमरा सब घसकू ।

स्टेट बससँ कोनो उपराग नै । ओही चलय, हमहु चली, तखन जकर चले सँह चलत । हमरा हटाकऽ चलब नै कोन तारीफ । लोककेँ बेसी उपकार होयतैक । अहाँक देखाउसेँ हमरोमे व्यवस्था होयत । ओ आकुंग जकाँ रहय । व्यापारी जकाँ नहि ।

रहिका आवि गेल । चतरल विराट शिरीष वक्षक सघन छाया । पानक दोकान, चाहक दोकान । एवसाइजक बड़का वाँसक डंटा । चकपास्ट । उरदी-धारी सभक चीज होइत । गाँजाक उदसे ।

अपन हँड बैंग आ अखबार सरियाकऽ मोहितलाल बजलाह—ड्राइभर साहेब ! ई अहाँक बसक आ स्टेट बसक लड़ाइ नहि थिक । नव आ पुरानक लड़ाइ थिक । पुरानो, अधलाह कहावऽबलामे किछु नीक छैक । नवो, नीक कहावऽबलामे किछु दोष । मुदा कुल-मिलाकऽ नवका पुरानासँ नीक थिक किएक तँ एकर नाम आइ भेल अछि आजुक हवामे साँस लेए । बदलल अवस्थामे जनमल ई नवका अपन असुविधानुसार आ बदली करैत अछि ।

आ फाटक फोलि नीचा उतरलाह ।

ड्राइभरो नीचा उतरलाह ।

हुनक लग ठाढ़ होइत बजलाह—बाबू... नीक अधलाह, हमरा अहाँक हाथमे अछि । बस कोनो एक्सीडेंट नै करै छै ; ड्राइभर एक्सीडेंट करै छैक । व्यवस्था बदललासँ कोन लाभ जँ लोक नै बदलल । जे-मे छोड़ू । हमरासँ अनचित भऽ गेल रहय । अधलाह नै मानब । बूढ़क गप्प । चलू-चाह पीवि लियऽ । जोतखी भाइ आउ-आउ ने तँ उपराग देब अहाँ ।

आ परम आत्मीयतासँ हुनक वाँहि धऽ चाहक दोकान दिस चललाह । फेर जेबीसँ एकटकही बहार कऽ बलात् मोहितक जेबीमे काँचि ड्राइभर युनुस खाँ उर्फ टमाटर बजलाह—ई किराया आपस लियऽ । बहुत दिनपर अहाँ गाम आपस आयल छी । नै... नै... से नै मानब ! टमाटर-सर्विसक फ्री-सर्विस ! आ भभाकऽ हँसलाह !

फेर चिकरलाह—तीनटा स्पेशल, स्ट्रांग चाह ! जोतखीकेँ कुलफीमे ! भुजंगी बानेट खोलि रेडिएटरमे पानि भरवाक उपक्रम करैत छल !

श्री ललितेश मिश्र, बी० डी० ओ०, जगदीशपुर, शाहाबाद ।

लिच्छीक महादेव

(पृष्ठ ७क शेषांक)

हुनक नवका अंगपर कोनो उल्लास प्रकट नहि कयलियनि । मोने-मोन बुझलहुँ जे आब ईहो हमरासँ छल करऽ लगलाह अछि । मोनमे बड़ तामस भेल । मुदा प्रतिकार तँ एकमात्र सूझल जे आब हमरो कोनो नीक वस्तु बाबूजी देताह तँ चुपचाप खा लेब आ हिनका अछूठा देखा देबनि ।

महाराज चल गेलाह आ हम हुनका संग नहि गेलहुँ । ई देखि हमरा बाबूजी पूछि देलनि—‘अहाँ हिनका संग आइ खेलाय नहि गेलहुँ ?’

—‘नहि जायब ?’

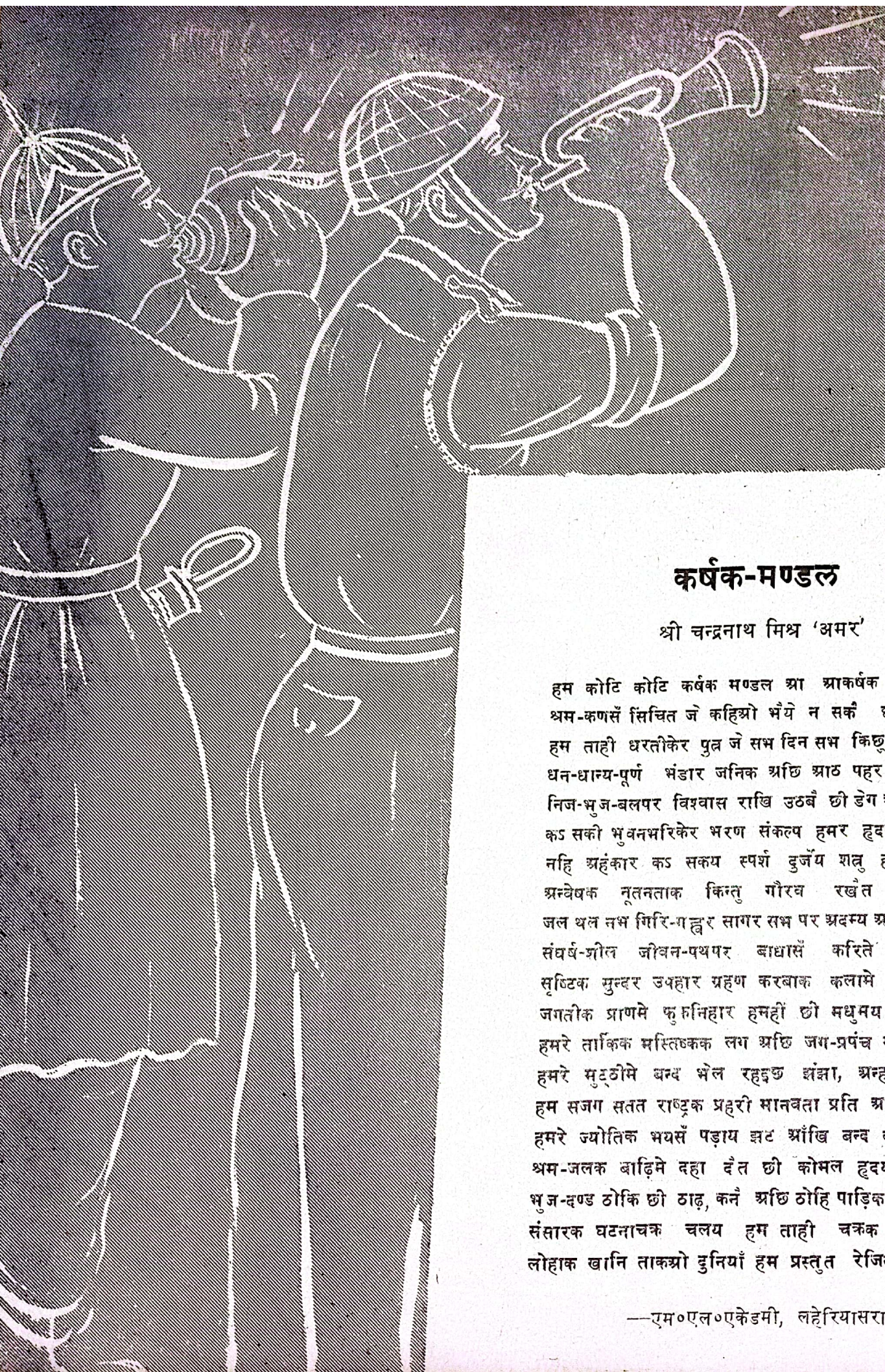
—‘किएक ?’

हमरा बुकौर लागि गेल । साधारणतः क्रोधक तुरत किछु प्रतिकार नहि भेलापर मानसिक स्थिति यैह भऽ जाइत छैक । हम अपन असन्तोषक कारण हिचकैत, कनैत, पोटा झाड़ैत बाबूजीकेँ कहि सुनौलियनि । ओ हँसि देलनि आ कहलनि जे हम

भगवानपुर गाछीसँ अहाँक हेतु एक घुड़छा लिच्छी म-बा देब । हम लिच्छीक मास अथवाक प्रतीक्षा करैत आश्वस्त भऽ गेलहुँ ।

दोसर दिन भिनसरमे महाराज हमरा बजबऽ अयलाह जे काका तोरा सोर करैत छथुन । हम नहि जयवाक सकल्प कऽ चुकल छलहुँ, तँ बहाना ताकऽ लगलहुँ । महाराज कहलनि जे पढ़ा काका (हमर बाबूजी) सेहो ओही ठाम छथि । हम मोन मारने गेलहुँ तँ काशी काका स्नान कऽ पूजा-पर बैसल छलाह । हमरा जाइत कहलनि—‘रे बतहा ! तौ जे बापकेँ उपराग देबऽ गेल छल जे काशी काका हमरा लिच्छी नहि देलनि से देख, ई लिच्छी नहि थिकैक, ई महादेव थिकाह । नमदेश्वरकेँ सम्पुटमेसँ बाहर कऽ सराइमे बँसकीपर राखि देलथिन । हम अपन अज्ञानपर ततेक लज्जित भेलहुँ जे बूझि पड़ल हमर देह छोट भेल चल जा रहल अछि ।

एम. एल. अकादमी, लक्षेरियासराय, दरभंगा



कर्षक-मण्डल

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

हम कोटि कोटि कर्षक मण्डल आ आकर्षक ई वसुन्धरा
श्रम-कणसें सिंचित जे कहिओ भैंये न सकै छथि अनुर्वरा
हम ताही धरतीकेर पुत्र जे सभ दिन सभ किछु छथि सहैत
धन-धान्य-पूर्ण भंडार जनिक अछि आठ पहर भरले रहैत
निज-भुज-बलपर विश्वास राखि उठबै छी डेग अपन निश्चल
कऽ सकी भुवनभरिकेर भरण संकल्प हमर हृदयक निश्चल
नहि अहंकार कऽ सकय स्पर्श दुर्जय शत्रु हय दीनताक
अन्वेषक नूतनताक किन्तु गौरव रखैत प्राचीनताक
जल थल नभ गिरि-गङ्गा सागर सभ पर अदम्य अधिकार हमर
संवर्ध-शील जीवन-पथपर बाधासँ करिते रही समर
सृष्टिक सुन्दर उपहार ग्रहण करबाक कलामे बनि प्रवीण
जगतीक प्राणमे फुलनिहार हमहीं छी मधुमय शान्ति-बीज
हमरे तार्किक मस्तिष्कक लग अछि जग-प्रपंच मानैत हारि
हमरे मुट्ठीमे बन्द भेल रहइछ झंझा, अन्हड़, बिहारि
हम सजग सतत राष्ट्रक प्रहरी मानवता प्रति अति जागरूक
हमरे ज्योतिक भयसँ पड़ाय झट आँखि बन्द कयने उलूक
श्रम-जलक बाढ़िमे दहा दैत छी कोमल हृदयक दुर्बलता
भुज-दण्ड ठोकि छी ठाढ़, कनै अछि ठोहि पाड़िकऽ निष्फलता
संसारक घटनाचक्र चलय हम ताही चक्रक धूरी छी
लोहाक खानि ताकओ दुनियाँ हम प्रस्तुत रेजिस छूरी छी

—एम०एल०एकेडमी, लहेरियासराय, दरभंगा ।

विधिक चिन्ता

—श्री चन्द्रनाथ मिश्र, 'अमर'

कल्पनाक व्योममे
भावना-दिमानवर
चढ़ल-चढ़ल धूमै छी
धूमि-धूमि देखै छी
पूब तथा पच्छिमके
उत्तर ओ दच्छिमके
चारुटा कोन तथा धराके, खमण्डलके
मानवकेर अन्तरमे
पैसल जे दानव अछि
जकर अट्टहास ई
मुखरित अछि दिग्दिगन्त
कर्ण-रन्ध्र पूरित अछि
सौँसे भूगोलकेर ।
ब्रह्मा दस साथ हाथ
बैसल झखैत छथि
कयलनि ओ सोचि कते रचना मनुष्यकेर
सृष्टिक सभ साधन दस श्रेष्ठ सभ प्राणीमे
किन्तु आइ वैह बनल कारण विनाशकेर
अपनेसँ अपनाके वंचित करैत अछि
मस्तिष्कक टेमीपर हृदयक सभ कोमलता
दीपपरक फनिगा सन कूदिकऽ जरैत अछि ।

एम० एल० एकेडमी, लहेरियासराय, दरभंगा ।

तथापि शान्त मुद्रामे कहथिन—अकालमे खयवाक अभावसँ यदि कयो मरि रहल होअय आ ओकरा लग मोट-डाँट कोनो व्यक्ति आविकऽ यदि भोजनक भीतिकताक प्रति घृणा प्रकट करैक आ फूल-पत्तीक सुगन्ध आ कोकिल कंठीक गीतसँ ओहि मुमूर्षुक पेट भरऽ चाहैक तँ से केहन लगतैक ?

तकर बाद बतकट्टिनियो जकाँ शुरू भऽ जाय !

शिशिर बाबू अपन कोठलीमे पड़ल छलाह । गीतक कोनो कड़ी गुनगुना रहल छलाह । मुदा दिमागिमे सीमा समायल छलथिन । नख-शिख हाव-भाव आदिपर ध्यान अबिते हुनकर मस्तिष्क झनझना उठनि । संगे-संग कोमल कलीक सान्निध्यक

कल्पनासँ कलंकक अनुभूति होइनि । ऊबि जाइनि मोन । समाजक सुदृढ़ नींवकेँ सम्हारने चलब कटु जानि पड़नि । एक-एक क्षण ओ अपन भावनाकेँ एकाग्र करवाक चेष्टा करथि । प्रयत्न साकार जानि पड़नि । एही बीच विचार-भ्रंखला टुटैत छनि । अत्यन्त मलीन वेशधारिणी सुकोमल कली, जकर लालीमे मलीनता आवि गेल छलैक, प्रवेश करैत अछि । एक प्रकारक संतोष अनुभव होइत छनि । सीमा तँ घबड़ाहटिसँ जेना हरदि भेल जाइत छलीह, शिशिर संतोषसँ सुदृढ़ भऽ रहल छलाह । समाजक मजबूत बन्धन हुनका कारागारक अनुभूति दऽ रहल छलनि । आदर्शक पवित्र सम्बोधनक समक्ष बन्दी बनब, हुनका

उपलब्धि

श्री गोपालजी झा, 'गोपेश

राति खन—

कतहुसँ हेको-हेकोक आवाज
कविगोष्ठीमे आयल छल
रसास्वादन जकर कयल कुठा-ग्रस्त प्रबुद्ध श्रोतालोकनि
आ कविगोष्ठीक अध्यक्ष महोदय ।

भोर खन—लौकिक राख दैत छलाह

स्वास्थ्य विज्ञानक गोर चारियेक विद्वान
संगहि गोर दसेक छुछुन्नरि छुछुआइत छल
आ कोनो बम्बइया फिल्म-तारिकाक आगाँ-पाछाँ
आँटोग्राफ लेबा लेल बेहाल छल
स्थानीय विश्वविद्यालयक छात्रदल ।

दुपहरमे—

युनिवर्सिटी लेक्चर थियेटर मध्य
आयोजित छल कोनो विचारगोष्ठी
आ विषय जकर छल इमोसनल इन्ट्रेशन
जाहिमे अध्यक्षता कयलनि एकटा संस्कृतक पंडित
आ उद्घाटन एकटा फिल्म-निर्माता ।

पुनः रातिमे—

देखने छलियनि पंडितजीकेँ
टोस्ट संग चाहक चुस्की लैत
वैदिकोजी भेटला सिनेमेमे
देखऽ आयल छला 'मेरे महबूब'
संगमे गृहणियो छलथिन
काडियन पहिरने, लिपस्टिक लगौने
आ किदनि-किदनि पंडितजीसँ फुसफुसाइत ।

राजभाषा विभाग, सचिवालय, पटना ।

आइ उमकि उमकि . . .

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आइ उमकि उमकि बमकि रहल

बंकड़ा जवान

देब देश हेतु जान
मातृभूमिकेर राखि लेब मान ओ गुमान
शत्रु सोमापर फानि
आबि ठाढ़ तोप तानि
चानि चूरि चीनकेर करब चूल्हिमे चलाय
अंग अंगमे उमंग
देखि दुष्ट दैत्य दंग
संग संग जंगकेर रंग-ढंग घमासान
बन्धु बूझि कयल प्रीति
थिके आर्यकेर रीति
किन्तु आब ने प्रतीति नीति देखि अनठेकान
हाथ रामकेर बाण
परशुरामकेर कृपाण
प्राणदान छाड़ि पाबि सकत बाण कोन आन
बन्द बुद्धिमे कपाट
छाड़ि बुद्धकेर बाट
ठाठ ठाठि ई कुठाठ होयत युद्धमे पिसान
ताकि ताक शत्रुताक
जानि-बूझि ई बराक
विश्व संघसँ फराक बैसि करय कूद-फान
प्राणदान माडि, जाउ
चारि खूट माडि, खाउ
चाउमाउ ने हँसाउ बाउ ! बापकेर बथान

आकाशवाणीक सौजन्यसँ

कायरता बुझाइ पड़लनि । ओ दृढ़ संकल्प कऽ लैत छथि, समाजक रूढ़िकेँ तोड़ि-फोड़ि देवाक हेतु । अपन कल्पनामे डूबल शिशिरक खोम्हारी तखन टुटलनि जखन सीमा घबड़ाइत जकाँ वजयवाक कारण पुछि रहल छलथिन । उत्तरमे मधुर स्वरमे बैसबाक आग्रह पाबि सीमा घबड़ा उठलीह । संगे संग विस्मयमे से पड़ि गेलीह । आइ कोन एहन विशेषता भऽ अयलैक जाहिसँ ओकथा सुनवाक बदलामे आदर ओ प्रतिष्ठासँ बैसाओल जा रहल छथि । एही गुनि-धुनिमे ओ कखन बैसि गेलीह से पते नहि चललनि । अपन उपस्थितिक ज्ञान तँ तखन भेलनि जखन शिशिर बाबू कोमल स्वरमे पूछि रहल छलथिन—अहाँ कविता लिखब कहियासँ शुरू कयलहुँ ?

सीमा सोचलनि—सपना तँ नहि देखि रहल छी । मर्महत स्वरमे

बजलीह—छोड़ू शिशिर बाबू, किएक व्यर्थमे एक गरीबकेँ बान्हि रखन छिएक ।

शिशिर बाबू कने विहसैत बाजि उठलाह—नहि अहाँ हमर मोनकेँ बान्हि लेलहुँ अछि । समाज एक दिस आ अहाँ एक दिस ।

एतवा कहि शिशिर बाबू आवेशसँ ओकर हाथ धऽ लेलथिन । सीमाक अन्तःकरणक सीमा ततेक पैघ बुझाइ देलकनि जेना कैक लोक ओहिमे अन्तर्भुक्त भऽ गेल हो ।

मुदा की ई सत्य भऽ सकैत अछि ? स्वप्न तँ स्वप्न होइत छैक अनका लेल, मुदा सीमाक लेल तँ स्वप्न अभिशाप छलैक । बहुत पैघ अभिशाप ।

पुलिस क्वार्टर, बाकरगंज, पटना-४

मैथिलीमे गतिरोध अछि?

— श्री चन्द्रबाबु मिश्र अमर —

कतिपय साहित्यिक बन्धु पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ तथा कतिपय बन्धु वंयक्तिक पत्र द्वारा वर्तमान कालमे मैथिलीमे गतिरोधक आशंका व्यक्त कयलनि अछि। यद्यपि हमर व्यक्तिगत मत एहिसँ भिन्न अछि। हम गत्यवरोधकेँ स्वीकार करवाक पक्षमे नहि छी। अपना पक्षमे अनेक समर्थन उपस्थित कऽ सकैत छी। जेना—किछु वर्ष पूर्व धरि, जाबत धरि नवीन स्वरूपमे मिथिला मिहिरक प्रकाशन आरम्भ नहि भेल छल, पत्र-पत्रिकोक क्षेत्र शून्यप्राय छल, जे कोनो दू-एक गोटा मासिक पत्र बहराइतो छल तँ तकरा नगण्य बुझक चाही। एम्हर आबिकऽ नवीन रूपमे मिहिरक प्रकाशन आरम्भ भेल अछि ततवे मात्रसँ यद्यपि एहि अभावक पूर्ति नहि मानल जा सकैछ, तथापि आंशिक पूर्ति एहि माध्यमसँ जतेक भेल अछि आ मैथिलीकेँ स्वत्व प्राप्त करवाक हेतु भेल आन्दोलनकेँ जतेक बल प्राप्त भेल अछि तकरा थोड़ नहि बुझक चाही (हम तँ थोड़ नहि बजैत छी)।

जनगणनाक समयमे जखन विरोधी कुचक, जे १९२१ ई०क एक कोटिसँ किछु उपरेक जनसंख्याकेँ १९५१ ई०मे किछु हजार धरि सीमित कऽ चुकल छल; पुनः १९६१क जनगणनामे एकर अस्तित्व लुप्त करवाक हेतु पूर्ण प्रयत्नशील छल, मिहिरक माध्यमसँ ओहि कुचकक प्रतिरोध करबामे बहुत शक्ति भेटल। हमर तँ एहन धारणा अछि जे विहारक राजधानीमे रहनिहार बहुत पैघ-पैघ

मनीषी एवं विचारक पर्यन्त मैथिलीक आन्दोलनक प्रति उदासीन जकाँ रहैत छलाह, किन्तु एकमात्र मिहिरक प्रकाशन हुनकालोकनिकेँ एहू दिस सोच-बाक हेतु बाध्य कऽ सकलनि आ आब ओ नीक जकाँ अनुभवे नहि करैत छथि अपितु एकर उत्थानक हेतु चिन्तनशील छथि।

साहित्य अकादमीमे मैथिलीक स्वीकृति हेतु जतवा डेग हमरालोकनि आगू बढि सकलहुँ अछि से ओही चिन्तनशीलताक फल थिक। यद्यपि एहि आन्दोलनकेँ एखन आरो तीव्र गतियेँ आगाँ बढयवाक प्रयोजन अछि। क्षणिक तीव्रता अयलासँ एहन महान् कार्य भऽ जायत तकर आशा नहि करक चाही।

एहि दिशामे मैथिलीभाषी क्षेत्रक सांसद एवं विधायकलोकनि जे एक बेर एकत्र भऽ अपन विचार उपस्थित करैत गेलाह तथा उचित अधिकार प्राप्तिक हेतु जे संकल्प लैत गेलाह ताहिमे एखन शिथिलता दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि, जकरा दूर करव आवश्यक। किन्तु जतवा जे किछु काज भेल अछि ताहि हेतु पत्रकार-लोकनिक सहयोग जे आव प्राप्त भऽ रहल अछि अथवा जकर आशा कयल जा रहल अछि सेहो किछु वर्ष पूर्व नहि

छल। अतः सम्प्रति आन्दोलनक दिशामे कोनो प्रकारक गत्यवरोध बूझव हमरा बुद्धियेँ युक्तिसंगत नहि थिक।

साहित्य निर्माणक दृष्टियेँ देखला सन्ताँ सेहो एहि बीच जतवा प्रगति भेल अछि, जतेक नवीन साहित्यकार सन्नद्ध भेलाह अछि सेहो हमरा मतक समर्थन करैत छथि। किछु वर्ष पूर्व धरि आङ्गुरपर गनल गुथल लोक छलहुँ जे बेसीसँ बेसी किछु कविता, किछु कथा, थोड़-बहुत पुराने विचारक पिष्टपेषणमूलक निबन्ध लिखि लैत छलहुँ, भाषाकेँ समृद्ध करवाक हेतु जे विभिन्न विधा अछि से सब शून्यप्राय छल, किन्तु मिहिरक प्रकाशनक बाद ओहि गतिमे तीव्रता आयल अछि आ जकर आतंक विरोधी वर्गक पेटक पानि डोला देलकनि अछि।

एही संग एहि तीन-चारि वर्षमे पुस्तकोक प्रकाशनमे गति तीव्र भेल अछि। नव-नव प्रकाशकलोकनि सेहो मैथिलीक पोथीक प्रकाशनक दिशामे अपन साहस देखावऽ लगलाह अछि, जकरा सन्तोषजनक नहि तँ कमसँ कम गतिमे वृद्धि करवाक दिशामे अनुकूल प्रयास अवश्य गनल जयवाक चाही।

विद्यापति स्मृति पर्वक आरम्भ तँ बहुत पहिने भेल छल, किन्तु एहिमे तीव्रता अनवाक श्रेय विद्यापतिगोष्ठी-

केँ सेहो थोड़-बहुत अवश्य छैक, ई गोष्ठी १९४९ ई० सँ सक्रिय भेल आ तकर बाद मिथिलांचलसँ बाहरो ई पर्व व्यापक रूप धारण करऽ लागल, किन्तु विगत ४-५ वर्षमे जेना ई अखिल भारतीय क्षेत्रमे पसरल अछि से एहिमे पूर्व नहि भऽ सकल छल। एहिमे एकटा विशे पता ईहो भेल अछि जे पहिने दस गोटे एकत्र भऽ ई पर्व मनबैत छलहुँ। किछु भाषण, किछु कवितापाठ आ किछु प्रस्ताव पास कऽ पुनः वर्ष दिन धरि दम सधने रहि जाइत छलहुँ। किन्तु आब किछु रचनात्मक, किछु ठोस काज करवाक दिस सेहो सचेष्ट भेलहुँ अछि ताहूँसँ गत्यवरोधक विपक्षमे मत भेटैत अछि।

चलचित्रक सम्बन्धमे बहुतेक दिन-सँ चर्चा होइत आबि रहल छल, किन्तु एहू दिशामे कोनो ठोस प्रयत्न नहि देखबामे अबैत छल। किन्तु आब एहि हेतु किछ विशेष आशा करवाक परिस्थिति सम्मुख देखि रहल छी। तहिना सभसँ ठोस काज जे होइत आयल अछि—शिक्षण-संस्था सभमे छात्रक वृद्धि, सेहो अनुकूल स्थितिमे जा रहल अछि। अतः वर्तमान समयमे गत्यवरोध कहव वा मानव हमरा मतें युक्तिसंगत नहि, किन्तु एतवा तँ अवश्य कहल जा सकैछ जे युग जाहि गतियेँ चलि रहल अछि आ विरोधी तत्त्व जाहि रूपेँ मैथिलीकेँ हतप्रभ करवाक चेष्टामे संलग्न अछि ताहि अनुपातेँ हमरालोकनिक गति तीव्र नहि भऽ रहल अछि, जाहि हेतु चिन्ता आवश्यक। एहि गतिक तीव्रतामे गतिरोध अनवामे दू तत्त्व काज कऽ रहल अछि एक बाह्य आ दोसर आन्तरिक।

आन्तरिक तत्त्व हम मुख्य रूपेँ भाषाक संकीर्णताकेँ मानैत छी। जखन हमरालोकनि ई बजैत छी जे मैथिलीभाषीक संख्या दू कोटिसँ ऊपर अछि तँ सतत ई ध्यानमे रखवाक चाही जे एहि दू कोटि मैथिलीभाषीक क्षेत्र

मैथिलीक विशाल क्षेत्रमे बसनिहार जतेक लोक अछि, सभक अपन-अपन क्षेत्रीय उच्चारण छैक, सभ क्षेत्रक अपन-अपन किछु शब्द-भंडार छैक। तँ ई आवश्यक जे सभ भागक लोककेँ मैथिलीक संग लऽ चलल जाय।

बड़ विशाल छैक। एहि विशाल क्षेत्रमे बसनिहार जतेक लोक अछि, सबक अपन-अपन क्षेत्रीय उच्चारण छैक, सब क्षेत्रक अपन-अपन किछु शब्द-भंडार आ अभिव्यक्ति-सामर्थ्य छैक। ते ई आवश्यक जे सब भागक लोककेँ मैथिलीक संग लऽ चलल जाय। ई मानल तथ्य थिक जे भाषाक विभिन्न स्वरूप होइत छैक आ भिन्न-भिन्न स्वरूपक अछैत सबमे एके आत्माक प्रतिष्ठापन भेल रहैत छैक। यदि एके स्वरूपक हेतु कट्टरपंथी बनल रहलासँ विशाल क्षेत्रकेँ बुढ़ि जयबाक

मैथिली यदि दू कोटि लोकक भाषा थिक तँ ओकर विकासक हेतु दू कोटि लोकक भावनापर सतत ध्यान राखऽ पड़त। दू कोटि लोककेँ ई विश्वास नीक जकाँ देया दबऽ पड़त जे मैथिली हमर थिक, मैथिलीक साहित्य हमर अपन साहित्य थिक।

संभावना देखाइ पड़य तँ उचित यैह थिक जे उदारताक अवलम्बन कयल जाय। एहन मैथिलीसँ, जे मैथिलीये

क्षेत्रक लोककेँ विदेशी बूझि पड़ैक, हमरालोकनिकेँ आगाँ बढ़ऽ पड़त। एहि सम्बन्धमे किछु विद्वान्क मत बड़ आग्रहपूर्ण छनि आ ओलोकनि विशुद्ध मैथिलीक फेरमे गतिशील मैथिलीकेँ साठि-सत्तरि वर्ष पाछाँ लऽ जयबाक प्रयासमे छथि। यद्यपि हमर ई धारणा अछि जे ई प्रयास मैथिलीक गतिमे निरर्थक सिद्ध होयत, किन्तु एतबा धरि तँ स्वीकार करऽ पड़त जे 'क्लासिक' मैथिलीसँ भाषा-विकासक कार्यमे बड़ बाधा पहुँचि रहलैक अछि। एहि आन्तरिक बाधाकेँ दूर करबाक एकेटा उपाय अछि आ से अछि यैह जे क्षेत्रगत अपन संकीर्णताकेँ कमशः दूर कयल जाय। मैथिलीकेँ क्षेत्रगत सीमामे नहि बान्हि ओकरा व्यापक बनाओल जाय। ई कार्य एक-दू दिनक नहि, वर्ष-दू वर्षक नहि, कतोक वर्षक अपेक्षा रखैत अछि। आरम्भमे कथा ओ उपन्यास आदिमे सब भागक बोलीकेँ उचित स्थान देबाक चेष्टा कयल जाय। यदि एहि प्रयोगसँ व्यापकताक भान हो तँ पुनः आगाँ अभियान सोचल जाय। सम्पूर्ण मैथिली-क्षेत्रक लोककेँ ई विश्वास देआवब आवश्यक अछि जे, जे अहाँ बजैत छी से मैथिली थिक आ अहाँक मैथिली कोनो तरहँ उपेक्षित वा उपेक्षणीय नहि अछि। ई विश्वास तँ खन देयाओल जा सकैत अछि जखन भाग-भागक बोली साहित्यमे स्थान पाओत। हमर धारणा अछि जे एक बेर सब भागक लोकक हृदयमे ई विश्वास जमा देलापर अनायासे मैथिलीक

विकासकेँ पाँखि लागि जयतँक। भाग-भागक लोकक हृदयमे रसल-वसल हीनभावनाकेँ दूर करबाक प्रयत्नकेँ युग-कर्तव्य बूझल जाय।

बाह्य तत्त्वक सम्बन्धमे अधिक किछु कहब पिष्टपेषण मात्र होयत। के नहि जनैत छी जे विहारक एकेगोट एहन भाषा अछि जे साहित्यिक मर्यादासँ ओतप्रोत अछि। से भाषा मैथिलीये थिक। किन्तु विहारक अन्य भाषा-भाषी, जे हीनभावनासँ ग्रस्त छथि, जनिका अपन भाषाक कोनो परम्परा वा साहित्य नहि छनि—ओलोकनि मैथिलीकेँ फुटलीयो आंखिये देखऽ नहि चाहैत छथि। यैह कारण थिक जे राजकीय स्तरपर वा राजनीतिक स्तरपर मैथिलीकेँ हतप्रभ करबाक कुचक चलैत रहैत अछि। एहि कुचककेँ विफल करबाक एके टा उपाय अछि—आ ओ उपाय अछि यैह जकर चर्च हम पूर्वमे कऽ चुकल छी।

मैथिली यदि दू कोटि लोकक भाषा थिक तँ ओकर विकासक हेतु दू कोटि लोकक भावनापर सतत ध्यान राखऽ पड़त। दू कोटि लोककेँ ई विश्वास नीक जकाँ देया देबऽ पड़त जे मैथिली हमर थिक, मैथिलीक साहित्य हमर अपन साहित्य थिक।

गर्मी आ अतिशयोक्ति

श्री सोमदेव, एम ० ए ०

बरसँ छ आगि
जरलहा हवा
खदबदाइछ पानि

--फूसि !
--सभटा फूसि !!
--मुच्चा फूसि !!!

बजइछ लोको कते' बड़ाकऽ
सभपर किछु भाव चढ़ाकऽ
दावपर चढ़ि सफा ओढ़ाकऽ
आ साँचे तँ ई अछि जे
बसातमे उड़ैछ भुम्हुर छाउर
जाहिमे
रान्हि की सकैत छी माछ ?
कड़कत की तेल ?
तरल जायत की करेजी ?
से, अलहुआ उसनि सकैत छी लूहमे अयस्स
पानियो नहि तपत एते'
चाहो बनि सक' जकर !
तेँ की,
जोर तँ अपन देखबैछ गर्मी !
किए' तँ
ऊपरसँ गन्हायल टमाटर अछि मनुक्ख !
तऽरसँ थर्मामीटर अछि मनुक्ख !!

पशुफाटक, धरणीधरपथ,
लहेरियासराय, दरभंगा।

फिल्मस्तरामे मैथिली पाठशाला

- श्री चन्द्रलाल मिश्र 'अमर' -

विगत १८ वर्षों में मैथिली शिक्षक काज करैत आबि रहल छी । मातृभाषाक उन्नति-उत्थान, उचित अधिकारक प्राप्ति, शिक्षाक माध्यम, मैथिलीमे दैनिक पत्र, मैथिलीक स्वतंत्र रंगमंच आदिक सम्बन्धमे कतेक कल्पना, कतेक तर्क-वितर्क ओ कतेक विचार विमर्श करैत रह-बाक संयोग होइत रहल अछि, किन्तु सिनेमा संसारमे जा, अभिनेत्री सभकेँ अथवा अभिनेता सभकेँ मैथिली पढ़बऽ पड़त तकर कल्पना नहि कयने छलहुँ । विद्यालयमे जे अध्यापन करैत रहलहुँ ताहिमे गद्यक व्याख्या, पद्यक अर्थ, व्याकरणक विषय आदि पढ़्य-बाक तँ पूर्ण अनुभव होइत रहल, किन्तु मैथिली उच्चारण करबामे कोन-कोन ध्वनिविशेष नितान्त प्रयोजनीय थिक, एहि दिस दृष्टि नहि गेल छल । ह्रस्व हो वा दीर्घ, दन्त्य, हो वा मूर्धन्य वा तालव्य, 'थिन' हो वा 'खिन' एहि प्रकारक अशुद्धिक संशोधनो करैत-करैत आधा वयस बीति गेल, मुदा मैथिलीक उच्चारण करबामे घामे-पसेने नहाइत छात्रो नहि भेटल छलाह । किन्तु सम्प्रति एक एहन संसारमे मैथिलीक उच्चारण सिखयबाक अवसर आबि गेल अछि जाहिठाम ई अनुभव भऽ रहल अछि जे एहि भाषाक विशुद्ध उच्चारण कतेक आयास-साध्य थिक ।

व्यंग्य सम्राट पो० श्री हरिमोहन झा लिखित कन्यादान-द्विरागमन उपन्यासक फिल्मीकरण सम्प्रति भऽ रहल अछि । एहिसँ पहिनेहुँ मैथिलीमे एक फिल्मक मुहूर्त आ दोसर फिल्मक किछु सूटिंग भऽ चुकल अछि । जाहि फिल्मक किछु सूटिंग भेल अछि ताहिमे संयोगसँ डायलाग डाइरेक्टरक रूपमे गोटेक मास काज करैत किछु अनुभव भेल छल, किन्तु कन्यादान-द्विरागमन फिल्ममे जखन एही कार्यक सम्पादनक हेतु बम्बई अगलहुँ आ काज आरम्भ भेलैक तखन जे अनुभव प्राप्त भऽ रहल अछि, ताहिसँ एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ अछि जे विहारमे जतेक प्रकारक मातृभाषा बाजल जाइत अछि ताहिमे सभसँ कठिन उच्चारण मैथिलीक होइत छैक, अपितु बंगलोलसँ कठिन । कारण एहिमे जतेक कलाकार भाग लऽ रहल छथि ताहिमे बेसी सिद्धहस्ते छथि । ककरो मातृभाषा बंगला थिकनि तँ ककरो उर्दू, ककरो मराठी तँ ककरो गुजराती आ हिनका-लोकनि हिन्दी, बंगला, भोजपुरी, मगही, पंजाबी, तमिल ओ तेलगुओमे

कतेक गोट काज कऽ चुकल छथि, सभ सुशिक्षित, सभ पढऽ, सभकेँ सिनेमा संसारक पूर्ण अनुभव प्राप्त, किन्तु राति-रातिभरि मैथिलीमे कथोप-कथन अभ्यास कयलाक बादो जखन कैमराक सोझाँमे उपस्थित होइत छथि तँ भीतरसँ एक प्रकारक आतंक अवश्य भऽ जाइत छनि ।

कतेक शब्दकेँ बदलबाक प्रयोजन एहि हेतु भऽ जाइत अछि जे ओहिसँ आगाँ आबऽवला शब्दक स्वरमे समानता नहि रहलाक कारणँ यदि पूर्वक शब्दक ध्वनि शुद्ध भऽ पबैत छनि तँ अगिला स्वर गड़बड़ाइत छनि आ अगिला ठीक करऽ लगैत छथि तँ पछिला गड़बड़ा जाइत छनि । मुख्य रूपेँ ध्वनि सिखबाक हेतु ओष्ठ संचालनपर ध्यान केन्द्रित कयने रहैत छथि आ तदनुसार ओहो अपना ओष्ठकेँ व्यापारमे आनि उच्चारण करबाक आयास करैत छथि । जेना 'तो' शब्दक उच्चारण करैत ओकार नहि भऽ ओकार तथा औकारक मध्यक स्वर उच्चरित होइत छनि कोना, एना, ओना आदि शब्दमे ह्रस्व एकार

ओकार मैथिलीमे उच्चरित होइत किन्तु से ह्रस्व उच्चारण हिनक सभक हेतु दुर्गह भऽ जाइत छनि हँसि, गरदनि, आदिमे अनि ह्रस्व इकार उच्चरित होइत जकरा ह्रस्व ओ दीर्घक मध्य राखि वर्जित छैक अथवा इकारकेँ दुनू व्यंजनक मध्य लऽ अवैत छथि । सकैत, कहैत छिएक आदि शब्दमे जे एकार अनि तकरा एकार ओ एकारक मध्य न अवैत छथि, विवृत आ इषद् विवृत अन्तरकेँ स्पष्ट करव परम कठिन होइत छनि तँ पूर्णतः प्राभ्यास कयने उत्तर जहाँ कैमराक सोझाँ उपस्थित होइत छथि कि संस्कार मन्द भऽ जाइत छनि ।

सिने-संसारक एक विशिष्ट ओख्यातनामा कलाकार एहि कठिन श्रमक कारणेँ जखन अपनाकेँ एहि कार्यसँ मुक्त कऽ लेलनि तखन एकर मनोवैज्ञानिक प्रभाव अन्य कलाकार सभपर प्रचण्ड रूपेँ पड़लनि, किन्तु एतेक कठिनता होइतो अस्सी प्रतिशतसँ पंचानवे प्रतिशत पर्यन्त मैथिलीक ध्वनि शुद्ध उच्चरित भऽ रहल अछि । ई एहिठामक कलाकार सभक धारणा-शक्तिक वैशिष्ट्य थिकनि । ई अनुभव भेल अछि जे यदि संवाद लिखि अभ्यास करबाक हेतु पहिने दऽ देल जाइत छनि तँ ओ विवृत ध्वनिक अभ्यास कऽ लैत छथि, तखन ओकर परिमार्जन अत्यन्त कठिन भऽ जाइत अछि । तेँ आव एहिना कयन जाइछ जे स्टूडियो अगलापर हुनका संवाद देल जाइत छनि आ सोझाँ मैथिली ध्वनिक अनुसार उच्चारण सिखाओल जाइत छनि । एहि प्रक्रियासँ काज अपेक्षाकृत सुगम भऽ रहल अछि ।

आब प्रश्न उठैत अछि जे यदि मैथिलीमे अधिकसँ अधिक फिल्म बनय, ई इच्छा अछियो तँ एकर विकास मैथिलीभाषी क्षेत्रक कलाकारकेँ लऽ कऽ कयल जाय, मुदा ई की से सम्प्रति सम्भव अछि ? हमरा जनैत एहि हेतु समय अपेक्षित अछि आ धैर्यक आवश्यकता सेहो । कारण, नाटकक मंचपर सफल कलाकार सोझे कैमरा सोझाँ आबि ठाढ़ भऽ गेलासँ सफल अभिनय नहि कऽ सकैत छथि ।

आब प्रश्न उठैत अछि जे यदि मैथिलीमे अधिकसँ अधिक फिल्म बनय ई इच्छा अछियो तँ एकर विकास मैथिली भाषी क्षेत्रक कला-

हमर आशय ई कथमपि नहि अछि जे संस्कृतिक रक्षा अथवा आदर्शक स्थापना सिनेमाक माध्यमसँ नहि हो ! हो अवश्य, किन्तु यथार्थताक परिसरसँ बाहर जाकऽ नहि, अपितु यथार्थके तेना मनोरंजक बनाओल जाय जाहिमे आदर्शक पुट आबि जाइक ।

भाषाक प्रति असौम अनुराग रहलाक कारणेँ एक अथवा दूटा फिल्म ओहोलोकनि आबिकऽ देखि लेथि, किन्तु एहिसँ मैथिली फिल्मक विकास संभव नहि छैक । संस्कृति ओ सभ्यताक हित चिन्तकक रुचिसँ जनसाधारणक रुचि मिलैत नहि छैक आ फिल्ममे पहिल दृष्टिकोण व्यवसायात्मक रहैत छैक । यदि एकरा व्यवसाय नहि मानि, किछु आन मानल जाय तँ तखन फिल्म बनयबासँ नीक थिक जे मैथिलीक कल्याणार्थ किछु अनुष्ठानी लोकनिकेँ कामाख्या, विन्ध्याचल, वैद्यनाथ आदि सिद्ध पीठसभमे अनुष्ठानपर बैसाय देल जाइनि । ई क्षेत्र व्यवसायकेँ उद्देश्य मानि विकसित कयल जा सकैत अछि आ जखने व्यवसायसँ एकर ई अच्छेद्य सम्बन्ध बुझबाक योग्य होयत कि तखने जनरुचि दिस ताकऽ पड़त । पंचानवे प्रतिशत लोक मनोरंजनार्थ सिनेमा देखैत अछि । पाँचकेँ हम अपवादमे राखि लेलहुँ अछि । मनोरंजनक हेतु यथार्थमे थोड़ेक तेल मसाला मिलयबाक प्रयोजन होइत छैक, तकर उपेक्षाकऽ सिनेमाक माध्यमसँ उपदेश किंवा आदर्शक पाठ मात्र उद्देश्य राखल गेलासँ एहि दिशामे विकासक आशा छोड़ि देबाक चाही ।

एहि कथनसँ हमर आशय ई कथमपि नहि अछि जे संस्कृतिक रक्षा अथवा आदर्शक स्थापना सिनेमाक माध्यमसँ नहि हो । हो अवश्य, किन्तु यथार्थताक परिसरसँ बाहर जाकऽ नहि, अपितु यथार्थकेँ तेना मनोरंजक

बनाओल जाय जाहिमे आदर्शक पुट आबि जाइक । उदाहरणार्थ हम कन्यादाने फिल्मकेँ लैत छी । लालककाक हेतु खुटिया मिर्जै, चमरउ जुत्ता, पाग आ दोपटा वेषमे राखल गेल अछि । की आब चमरउ जुत्ता पहिरनिहार पाँचो प्रतिशत लोक अछि ? यदि मिथिलाक हेतु सवारीमे एक्केटा राखल जाय तँ की से यथार्थ कहल जायत ? लालकाकी, दुनमुनकाकी उघाड़े आडे, रहथि ? स्त्रीगण खाली लहठीए पहिरैत अछि ? सूति, बाजूबन, झुम्मक, बड़हरी आदि आभूषण आबो लोक ओहिना पहिरैत अछि, जेना पहिने पहिरैत छल ? एहिसँ तँ कृत्रिमताक बोध होइछ, यथार्थताक नहि । एहीसँ संस्कृतिक रक्षा नहि भऽ सकैत अछि । किन्तु एकर अर्थ ई नहि जे बेसी अडरेजी पढ़ल लिखल लोक सिकरेट पिबैत छथि, शहरक कोन कथा, देहातोमे रहनिहार बहुतो गोटे पेयाजु खाय लगलाह अछि, तँ हम तकरा पर्दा पर लऽ आनी । एहिसँ संस्कृतिपर अवश्य आघात लागत । एहन कचारकेँ प्रश्रय देलासँ अवश्य

समाज पतनोन्मुख होयत, किन्तु कुर्ता धोतीकेँ नुकीलासँ संस्कृति बाँचत, हम ताहि पक्षमे नहि छी ।

एहि सभ दृष्टिएँ नीक जकाँ सोचऽ विचारऽ पड़त, अपना क्षेत्रमे अभिनेत्री नहि छथि, ताहूँ दिस समाजकेँ साहस करऽ पड़त । ई नहि बूझक चाही जे अभिनेत्री जे होइत अछि से सभ नटिने होइत अछि । ओना जे नटिन अछि से ड्योढ़ी टाटक भितरो अछि । जखन एहि प्रकारेँ एहि क्षेत्रक हेतु अपन समाजमे लोक प्रस्तुत होयत तखन फिल्मक विकास अवश्य होयत आ फिल्मक माध्यमसँ अपन मातृभाषाक प्रति जे जनजागरण आबि सकैछ से आजुक युगमे दोसर रूपेँ नहि । अतः आवश्यक ई अछि जे मिथिलामे फिल्मी पाठशाला हो, नहि कि फिल्मिस्तानमे मैथिली पाठशाला स्थापित कयने ई काज भऽ सकत ।

एभर ग्रीन होटल रूम नं० १८ खार,

बम्बई पश्चिम

अग्रिम अंक कथा-अंक

कथा	कथाकार
१. राजा	: श्री नगेंद्र कुमार
२. सूप महक भाँटा	: श्री गंगेश गुंजन
३. चाँप-कली	: श्री मनमोहन झा
४. नव घाव : पुरान टोस	: श्रीमती गौरी मिश्र, एम. ए., डिप-इन. एड.
५. डोरी	: श्री राधाकृष्ण
६. अगुरवान	: श्री धूमकेतु,
७. मुक्ति	: श्री रामकृष्ण झा 'किसुन'
८. हरिश्चन्द्र नाटक	: श्री बलराम, एम्. ए.
९. चन्द्रबिम्ब	: प्रोफेसर श्री मायानन्द मिश्र, एम्. ए.
१०. अन्नधर मूसक कथा	: श्री सोमदेव, एम्. ए.
११. पिपासल ठोर	: प्रोफेसर श्री रामदेव, एम्. ए.
१२. सपना आ सत्य	: प्रोफेसर श्री सुरेश्वर झा, एम्. ए.
१३. बादर	: प्रोफेसर श्री धीरेन्द्र, एम्. ए.